ज्योतिष में मानव जीवन का संदर्भ

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

आयुर्वेद- ज्योतिष का सामाजिक पक्ष भी अत्यंत महत्वपूर्ण है. यह शास्त्र केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य तक सीमित नहीं, बल्कि समाज में संतुलन, करुणा और उत्तरदायित्व की भावना को भी प्रोत्साहित करता है. रोग को केवल व्यक्तिगत समस्या न मानकर सामाजिक और पर्यावरणीय संदर्भ में देखा जाता है. इस दृष्टि से आयुर्वेद-ज्योतिष लोककल्याण का भी एक प्रभावी माध्यम बन सकता है. समग्र रूप से देखा जाए तो आयुर्वेद-ज्योतिष भारतीय ज्ञान-परंपरा का एक ऐसा समन्वित विज्ञान है, जो स्वास्थ्य, समय और कर्म को एक सूत्र में बाँधता है. यह न तो अंधविश्वास है और न ही केवल आध्यात्मिक कल्पना, बल्कि सहस्राब्दियों के अनुभव, निरीक्षण और चिंतन पर आधारित जीवन-दर्शन है. यदि इसे आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान और नैतिक दृष्टिकोण के साथ अपनाया जाए, तो यह न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य, बल्कि सामाजिक और वैश्विक कल्याण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है.

आयुर्वेद- ज्योतिष भारतीय ज्ञान-परंपरा की वह समन्वित और समग्र धारा है, जिसमें मानव जीवन को केवल शारीरिक संरचना के रूप में नहीं, बल्कि प्रकृति, काल, कर्म और चेतना के व्यापक संदर्भ में देखा जाता है. भारतीय दर्शन के अनुसार मानव सूक्ष्म और स्थूल दोनों स्तरों पर ब्रह्मांड से जुड़ा हुआ है और यही कारण है कि शरीर, मन और आत्मा की स्थिति पर ग्रहों, नक्षत्रों और समयचक्र का प्रभाव पड़ता है. आयुर्वेद जीवन की रक्षा और संवर्धन का विज्ञान है, जबकि ज्योतिष जीवन के समयबद्ध स्वरूप और कर्मफल के नियमों को समझने का माध्यम है. इन दोनों शास्त्रों का संयुक्त अध्ययन ही आयुर्वेद- ज्योतिष कहलाता है, जो स्वास्थ्य, रोग, आयु, उपचार और जीवन-शैली को एक समग्र दृष्टि से देखने का मार्ग प्रशस्त करता है. आयुर्वेद का मूल उद्देश्य केवल रोगों का उपचार नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन की स्थापना है.

आयुर्वेद के अनुसार स्वास्थ्य वह अवस्था है जिसमें वात, पित्त और कफ नामक त्रिदोष संतुलन में हों, सप्तधातुएँ सम्यक रूप से कार्य कर रही हों, मल का उत्सर्जन नियमित हो, अग्नि संतुलित हो तथा मन, इन्द्रियाँ और आत्मा प्रसन्न हों. यह दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक है, क्योंकि इसमें शारीरिक के साथ-साथ मानसिक और आध्यात्मिक पक्ष भी समाहित हैं. आयुर्वेद यह स्वीकार करता है कि रोग केवल बाह्य कारणों से नहीं, बल्कि आंतरिक असंतुलन, मानसिक तनाव और प्रकृति के नियमों के उल्लंघन से उत्पन्न होते हैं. ज्योतिष भी इसी प्रकार जीवन को व्यापक संदर्भ में देखने का शास्त्र है. ज्योतिष के अनुसार ग्रह केवल आकाशीय पिंड नहीं हैं, बल्कि विशिष्ट ऊर्जाओं और चेतन शक्तियों के प्रतीक हैं, जो मानव जीवन के विभिन्न पक्षों को प्रभावित करते हैं. सूर्य जीवन-शक्ति और आत्मा का, चंद्र मन और भावनाओं का, मंगल ऊर्जा और रक्त का, बुध बुद्धि और तंत्रिका तंत्र का, गुरु ज्ञान और विस्तार का, शुक्र प्रजनन और सुख का तथा शनि दीर्घकालिक कर्म, रोग और तपस्या का प्रतिनिधित्व करता है. राहु और केतु को छाया ग्रह कहा गया है, जो अप्रत्याशित घटनाओं, मानसिक उलझनों और गूढ़ अनुभवों से जुड़े माने जाते हैं.

आयुर्वेद-ज्योतिष का आधार यह मान्यता है कि ग्रहों की स्थिति, दशा और गोचर मानव शरीर के दोष-संतुलन को प्रभावित करते हैं. वात दोष पर शनि और राहु का प्रभाव माना जाता है, पित्त दोष पर सूर्य और मंगल का तथा कफ दोष पर चंद्र और शुक्र का प्रभाव देखा जाता है. जब किसी व्यक्ति की कुंडली में संबंधित ग्रह पीड़ित अवस्था में होते हैं, तो उसी प्रकार के दोष विकार शरीर में उत्पन्न होने की संभावना बढ़ जाती है. उदाहरण के लिए यदि शनि निर्बल या पीड़ित हो, तो व्यक्ति को जोड़ों का दर्द, स्नायु विकार, कब्ज, अनिद्रा और दीर्घकालिक रोगों की प्रवृत्ति हो सकती है. इसी प्रकार सूर्य की कमजोरी से पाचन, नेत्र और हृदय संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं. आयुर्वेद-ज्योतिष में रोग निदान केवल वर्तमान लक्षणों के आधार पर नहीं किया जाता, बल्कि यह देखा जाता है कि रोग का मूल कारण क्या है, वह किस काल में सक्रिय होगा और उसका संबंध व्यक्ति के पूर्वकर्मों से कैसे जुड़ा हुआ है. ज्योतिषीय दृष्टि से दशा-अंतरदशा का विश्लेषण करके यह जाना जाता है कि रोग कब प्रारंभ हुआ, कब बढ़ेगा और कब उसमें राहत की संभावना है. आयुर्वेदिक चिकित्सा इस जानकारी के आधार पर औषधि, पंचकर्म, आहार और विहार का निर्धारण करती है.

इस प्रकार आयुर्वेद-ज्योतिष रोग के उपचार में पूर्वानुमान और रोकथाम दोनों की भूमिका निभाता है. इस समन्वित पद्धति में आहार और जीवन-शैली का विशेष महत्व है. आयुर्वेद- ज्योतिष यह मानता है कि प्रत्येक व्यक्ति की प्रकृति भिन्न होती है और उस पर ग्रहों का भी प्रभाव पड़ता है. अत: सभी के लिए एक समान आहार या दिनचर्या उपयुक्त नहीं हो सकती. वात प्रधान व्यक्ति के लिए उष्ण, स्निग्ध और स्थिर आहार लाभकारी माना जाता है, जबकि पित्त प्रधान व्यक्ति के लिए शीतल, हल्का और तिक्त आहार उपयुक्त होता है. कफ प्रधान व्यक्ति को हल्का, रूक्ष और उष्ण आहार लेने की सलाह दी जाती है. ज्योतिषीय दृष्टि से ग्रहों की स्थिति देखकर इन आहार-विहार संबंधी निर्देशों को और अधिक सटीक बनाया जा सकता है. आयुर्वेद- ज्योतिष में नक्षत्रों और मुहूर्त का भी विशेष स्थान है.

प्राचीन ग्रंथों में औषधि संग्रह, चिकित्सा आरंभ और शल्य क्रिया के लिए शुभ नक्षत्रों और काल का उल्लेख मिलता है. यह माना गया है कि विशिष्ट नक्षत्रों में औषधियों की शक्ति अधिक प्रभावी होती है और उपचार का परिणाम भी बेहतर होता है. इसी प्रकार पंचकर्म जैसे वमन, विरेचन और बस्ती आदि क्रियाओं के लिए भी उचित काल का चयन किया जाता है, जिससे शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े. मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में आयुर्वेद- ज्योतिष की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है. आधुनिक जीवन में तनाव, चिंता, अवसाद और अनिद्रा जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं. आयुर्वेद- ज्योतिष मानसिक रोगों को केवल रासायनिक असंतुलन के रूप में नहीं, बल्कि मन, ग्रह-स्थिति और जीवन-शैली के असंतुलन के रूप में देखता है. चंद्र और बुध की स्थिति मन और बुद्धि को प्रभावित करती है, जबकि राहु मानसिक भ्रम और भय को बढ़ा सकता है. आयुर्वेदिक औषधियाँ, योग, ध्यान, प्राणायाम और मंत्र चिकित्सा के माध्यम से मानसिक संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया जाता है.

स्त्री स्वास्थ्य के संदर्भ में भी आयुर्वेद-ज्योतिष की भूमिका उल्लेखनीय है. मासिक धर्म, गर्भधारण, गर्भावस्था और प्रसव जैसे विषयों में चंद्र, शुक्र और गुरु की भूमिका मानी गई है. गर्भ संस्कार की परंपरा इसी समन्वित दृष्टि का उदाहरण है, जिसमें गर्भकाल के दौरान माता के आहार, विचार और वातावरण पर विशेष ध्यान दिया जाता है.

पौष विनायक चतुर्थी क्यों मानी जाती है खास

सनातन धर्म में भगवान गणेश को प्रथम पूज्य देव माना गया है. किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत गणपति पूजन के बिना अधूरी मानी जाती है. ऐसे में हर महीने आने वाली विनायक चतुर्थी का विशेष महत्व होता है. लेकिन जब यह तिथि पौष माह में पड़ती है, तो इसका धार्मिक और आध्यात्मिक प्रभाव और भी बढ़ जाता है.

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान गणेश का जन्म चतुर्थी तिथि को हुआ था. यही कारण है कि हर माह शुक्ल और कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को गणपति की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है. कहा जाता है कि शुक्ल पक्ष की विनायक चतुर्थी का व्रत करने से व्यक्ति के जीवन से विघ्न-बाधाएं दूर होती हैं और सुख-समृद्धि में वृद्धि होती है. पौष विनायक चतुर्थी को खासतौर पर विपत्तियों से रक्षा और संतान की खुशहाली के लिए किया जाने वाला व्रत माना गया है. इस दिन पूजा, मंत्र जाप और नियमपूर्वक व्रत करने से गणेश जी शीघ्र प्रसन्न होते हैं. पौष माह की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को मनाई जाने वाली पौष विनायक चतुर्थी इस बार विशेष मानी जा रही है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस दिन भगवान गणेश की विधिवत पूजा करने से जीवन के सभी विघ्न दूर होते हैं और सुख-समृद्धि का वास होता है.

मान्यता है कि पौष विनायक चतुर्थी का व्रत विशेष रूप से महिलाएं संतान सुख, परिवार की खुशहाली और विपदाओं से रक्षा के लिए करती हैं.

पूजा का शुभ मुहूर्त

इस दिन गणेश पूजा के लिए शुभ समय सुबह 11 बजकर 19 मिनट से दोपहर 1 बजकर 11 मिनट तक रहेगा. इस अवधि में पूजा करने से विशेष फल की प्राप्ति होती है.

गणेश जी के 12 नामों का महत्व

ज्योतिषाचार्य अनीष व्यास के अनुसार, विनायक चतुर्थी के दिन गणेश जी के 12 नामों का जाप करने से दुख, दोष और मानसिक कष्ट दूर होते हैं. ये नाम हैं— सुमुख, एकदंत, कपिल, गजकर्णक, लम्बोदर, विकट, विघ्नराजेन्द्र, धूम्रवर्ण, भालचंद्र, विनायक, गणपति और गजानन.

नए साल से पहले घर से हटाएं ये चीजें

नया साल हर किसी के लिए नई उम्मीदें, नए लक्ष्य और सकारात्मक बदलाव लेकर आता है. ज्योतिष की दृष्टि से साल 2025 मंगल ग्रह से प्रभावित रहा, जो ऊर्जा, संघर्ष और उतार-चढ़ाव का प्रतीक माना जाता है. यही कारण है कि बीता हुआ साल कई लोगों के लिए तनाव, अधूरे काम, जल्दबाजी और मानसिक बेचैनी भरा रहा. अब नए साल 2026 को लेकर उम्मीद की जा रही है कि यह वर्ष शांति, स्थिरता और तरक्की का संकेत देगा. ज्योतिष और वास्तु शास्त्र के अनुसार, नए साल में सकारात्मक ऊर्जा को आकर्षित करने के लिए जरूरी है कि पुराने साल की नकारात्मकता को पीछे छोड़ दिया जाए. वास्तु मान्यताओं के मुताबिक, घर में पड़ी कुछ बेकार, टूटी या अनुपयोगी चीजें ऊर्जा के प्रवाह को रोकती हैं. इसका असर सीधे व्यक्ति के काम, सोच और तरक्की पर पड़ता है.

अगर नए साल से पहले घर से ऐसी चीजों को हटा दिया जाए, तो रुके काम बनने लगते हैं और जीवन में नए अवसर सामने आने लगते हैं. नया साल केवल कैलेंडर बदलने का नाम नहीं है, बल्कि यह जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का अवसर भी होता है. वास्तु शास्त्र के अनुसार, अगर घर में नकारात्मक ऊर्जा जमा हो जाए, तो व्यक्ति चाहे जितनी मेहनत कर ले, उसे अपेक्षित परिणाम नहीं मिलते. वास्तु विशेषज्ञों का कहना है कि घर में पड़ी पुरानी, टूटी या बेकार चीजें ऊर्जा के रास्ते में रुकावट बनती हैं. इससे कामों में देरी, मानसिक तनाव और आर्थिक परेशानियां बढ़ सकती हैं. इसलिए साल 2026 की शुरुआत से पहले घर की साफ-सफाई और गैरजरूरी सामान को बाहर निकालना शुभ माना गया है.

नए साल से पहले पुराने और खराब जूते-चप्पलों को घर से बाहर कर देना चाहिए. यह न सिर्फ साफ-सफाई की दृष्टि से सही है, बल्कि वास्तु के लिहाज से भी शुभ माना जाता है. क्यों जरूरी है ये बदलाव- मान्यता है कि जब घर में फालतू और बेकार सामान कम होता है, तो सकारात्मक ऊर्जा का संचार बढ़ता है. इससे निर्णय क्षमता मजबूत होती है. रुके हुए काम बनने लगते हैं.

खरमास में केक काटना सही या गलत?

खरमास का नाम आते ही लोगों के मन में सबसे पहला सवाल यही उठता है—क्या इस दौरान कोई भी खुशी का आयोजन करना सही है? शादी, गृह प्रवेश जैसे मांगलिक कार्यों पर रोक की बात तो सभी जानते हैं, लेकिन जब इसी अवधि में किसी का जन्मदिन या शादी की सालगिरह आ जाए, तब दुविधा और बढ़ जाती है. क्या केक काटना अशुभ माना जाएगा? क्या पार्टी करना गलत है? या फिर खुशियां मनाने का भी कोई धार्मिक तरीका है? अगर आपके मन में भी यही सवाल हैं, तो खरमास के नियमों को सही संदर्भ में समझना बेहद जरूरी है.

वैदिक पंचांग के अनुसार, खरमास वह अवधि होती है जब सूर्य धनु या मीन राशि में गोचर करता है. इस समय को शास्त्रों में शुभ-मांगलिक संस्कारों के लिए अनुकूल नहीं माना गया है. विवाह, गृह प्रवेश, मुंडन जैसे संस्कारों से इस दौरान परहेज करने की परंपरा है. इसी वजह से कई लोगों को लगता है कि खरमास में किसी भी तरह का जश्न मनाना वर्जित है. हालांकि ज्योतिषाचार्यों के अनुसार, जन्मदिन या शादी की सालगिरह को मांगलिक संस्कार नहीं माना जाता, बल्कि ये व्यक्तिगत खुशी के अवसर होते हैं. इसलिए खरमास में इन्हें मनाने पर शास्त्रों में कोई स्पष्ट रोक नहीं है. आप इस दौरान बर्थडे या एनिवर्सरी मना सकते हैं, लेकिन तरीका सात्विक और सरल होना चाहिए.

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, खरमास में दिखावे, अत्यधिक शोर-शराबे, शराब और मांसाहार से बचना बेहतर माना जाता है. परिवार और करीबी लोगों के साथ सादगी से किया गया सेलिब्रेशन शुभ रहता है. वहीं, इस दौरान किसी नई व्यावसायिक शुरुआत, बड़े लॉन्च या भव्य पार्टी से बचने की सलाह दी जाती है. संयम और संतुलन के साथ मनाई गई खुशी ही खरमास में सबसे उत्तम मानी जाती है.

घर की ये चीज बना सकती है आपको अमीर

सही दिशा में रखने से रुके पैसे भी आने लगते हैं

वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर की ऊर्जा का सीधा प्रभाव व्यक्ति की आर्थिक स्थिति पर पड़ता है. सिर्फ घर की बनावट ही नहीं, बल्कि उसमें रखी चीजों की दिशा और स्थान भी बहुत मायने रखते हैं. खासतौर पर घर की तिजोरी को धन का केंद्र माना गया है. अगर तिजोरी सही दिशा में रखी जाए, तो यह धन को आकर्षित करती है, वहीं गलत दिशा में रखने से पैसा आने के बजाय खर्च होता चला जाता है.

हर व्यक्ति चाहता है कि उसके जीवन में कभी पैसों की कमी न हो और मेहनत का पूरा फल मिले. लेकिन अक्सर देखा जाता है कि अच्छी कमाई के बावजूद भी पैसा हाथ में टिकता नहीं है. कभी अचानक खर्च बढ़ जाते हैं, तो कभी कर्ज जैसी स्थिति बन जाती है. ऐसी परिस्थितियों में लोग ज्योतिष और वास्तु शास्त्र का सहारा लेते हैं. वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर की ऊर्जा का सीधा प्रभाव व्यक्ति की आर्थिक स्थिति पर पड़ता है. सिर्फ घर की बनावट ही नहीं, बल्कि उसमें रखी चीजों की दिशा और स्थान भी बहुत मायने रखते हैं. खासतौर पर घर की तिजोरी को धन का केंद्र माना गया है. अगर तिजोरी सही दिशा में रखी जाए, तो यह धन को आकर्षित करती है, वहीं गलत दिशा में रखने से पैसा आने के बजाय खर्च होता चला जाता है. वास्तु शास्त्र में तिजोरी से जुड़े कुछ सरल लेकिन प्रभावी उपाय बताए गए हैं, जिन्हें अपनाकर न केवल बेवजह के खर्चों पर रोक लगाई जा सकती है, बल्कि आय के नए स्रोत भी खुल सकते हैं. वास्तु शास्त्र में धन और समृद्धि को लेकर कई महत्वपूर्ण नियम बताए गए हैं. इन्हीं में से एक है घर की तिजोरी का सही स्थान.

मान्यता है कि तिजोरी में सिर्फ पैसा ही नहीं, बल्कि घर की आर्थिक ऊर्जा भी सुरक्षित रहती है. ऐसे में अगर तिजोरी गलत दिशा में रखी हो, तो इसका नकारात्मक असर सीधे व्यक्ति की आर्थिक स्थिति पर पड़ता है. वास्तु शास्त्र के अनुसार, तिजोरी को उत्तर दिशा में रखना सबसे शुभ माना गया है. उत्तर दिशा को धन के देवता कुबेर और मां लक्ष्मी की दिशा कहा जाता है. इस दिशा में तिजोरी रखने से धन में वृद्धि होती है और आमदनी के नए रास्ते खुलते हैं. ध्यान रखने वाली खास बात यह है कि तिजोरी का मुंह भी उत्तर दिशा की ओर ही खुले, ताकि सकारात्मक ऊर्जा भीतर प्रवेश करती रहे. अक्सर लोग सुविधा के अनुसार तिजोरी को दक्षिण या पश्चिम दिशा में रख देते हैं, जो वास्तु के अनुसार अशुभ माना गया है. ऐसा करने से पैसा रुकता नहीं, खर्च बढ़ने लगते हैं और कई बार कर्ज जैसी परेशानियां भी सामने आ सकती हैं. यदि आपकी तिजोरी गलत दिशा में रखी है, तो उसे बदलना आर्थिक रूप से फायदेमंद साबित हो सकता है.

ये आसान उपाय भी करें

अगर तिजोरी सही दिशा में रख दी गई है, तो कुछ छोटे-छोटे उपाय और भी धन लाभ के योग बढ़ा सकते हैं. तिजोरी के अंदर लाल रंग का कपड़ा बिछाना शुभ माना जाता है, क्योंकि लाल रंग ऊर्जा और समृद्धि का प्रतीक है. इसके साथ ही तिजोरी में श्री यंत्र रखने से धन आगमन के योग मजबूत होते हैं. एक चांदी का सिक्का या मां लक्ष्मी की छोटी तस्वीर रखना भी बेहद शुभ माना गया है.

अव्यवस्था से बचें- वास्तु शास्त्र के अनुसार, तिजोरी में फालतू, पुराने कागज या बेकार सामान नहीं रखना चाहिए. तिजोरी में सिर्फ पैसे, जरूरी दस्तावेज और गहने ही रखें. गंदगी और अव्यवस्था नकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाती है, जिससे धन रुकने लगता है. इन सरल वास्तु उपायों को अपनाकर न सिर्फ आर्थिक परेशानियां कम की जा सकती हैं, बल्कि जीवन में स्थिरता और समृद्धि भी लाई जा सकती है.

राशिफल

दिनांक- 21 से 27 दिसम्बर 2025 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित
प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार, जबलपुर मो.नं. 098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य धनु राशि में, मंगल धनु राशि, बुध वृश्चिक राशि में, वक्री गुरू कर्क राशि में, शुक्र धनु राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा धनु मकर कुम्भ और मीन राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- इस सप्ताह ता. 25 को मंगल उश्रराषाढ़ नक्षत्र में प्रवेश करता है जिसके प्रभाव से गुड़, खाड़, सोना, चांदी, अलसी, ऐरेण्डा आदि तिलहन एवं अनाजों में कुछ तेजी रहेगी, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहेगी, इस समय शुक्र बुध का मेल तेजी का संकेत देता है.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

रविवार 21 दिसम्बर को चन्द्रदर्शन
मंगलवार 23 दिसम्बर को विनायकी गणेश चतुर्थी व्रत

मेष

आपको सार्वजनिक क्षेत्र में यश और मान सम्मान मिलेगी, नवीन योजनाओं की पूर्ति होगी, पारिवारिक वातावरण उत्साहपूर्ण रहेगा, छोटी सी बीमारी आपको कई दिन तक परेशान कर सकती है, व्यापारिक कारणों से यात्रा की संभावना है, आप अपनी वाणी के प्रभाव से कठिन कार्यो में सफलता प्राप्त करेंगे, नई मित्रता उपयोगी सिद्ध होगी.

वृषभ

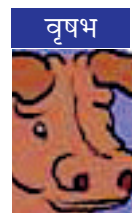

आपको कई अच्छे अवसरों का लाभ मिलेगा, किसी सार्वजनिक क्षेत्र या समारोह में भाग लेना पडेगा, यश और सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी, सहकर्मियों के साथ महत्वपूर्ण योजना बनेगी, जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, नौकरी पेशा व्यक्तियों को नई जिम्मेदारी उठानी पड़ेगी, नवीन आर्थिक संसाधनों पर विचार होगा, सप्ताहान्त में आजीविका को लेकर कोई

मिथुन

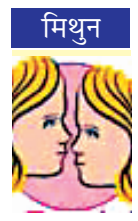

आपको पारिवारिक वातावरण सुखद और प्रसन्नतादायक बनाने में मदद मिलेगी, नये अनुभव प्राप्त होंगे, मित्र से अच्छे परामर्श का योग है, आप किसी व्यवसाय की परिकल्पना कर रहे हैं, तो वह साकार होगी, शत्रु बाधा का सामना करना होगा, नौकरी एवं राजनैतिक क्षेत्रों में अनुकूलता रहेगी, पारिवारिक उत्तरदायित्व निभाने पड़ेगे, सत्संग में रूचि बढ़ेगी.

कर्क

सप्ताह के पूर्वार्ध में अति आत्म विश्वास में लिये गये फैसले बदलने पड़ सकते हैं, परेशानियों से छुटकारा मिलेगा, धैर्यपूर्वक कार्य करें, पैतृक संपत्ति संबंधी विवादों से सफलता मिलेगी, साझेदारी का कार्य लाभ देगा, बिना सोचे समझे खर्च करने में परेशानी होगी, महत्वपूर्ण मेलजोल मुलाकात एवं अधिकारियों से सहयोग प्राप्ति का योग है.

सिंह

स्वास्थ्य में सुधार होगा, दूर दराज की यात्रा हो सकती है, रोजगार के क्षेत्र में उन्नति होगी, व्यापारिक गतिविधियों पर ध्यान रखकर कार्य करें, किसी पारिवारिक विषय को लेकर आप चिंतित रह सकते हैं, प्रिय व्यक्ति का सहयोग मिलेगा, जल्दबाजी एवं अपूर्ण समाचारों पर कोई भी निर्णय न लें, उद्देश्यपूर्ति का योग है, राजकीय कार्यो में लापरवाही न करें.

कन्या

इस सप्ताह सुख एवं सुविधा साधनों को जुटाने में सफलता मिलेगी, कारोबार, परीक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी, सप्ताह के मध्य कोई खास व्यक्ति आपके परिश्रम पर पानी फेरने की कोशिश करेगा, अधिकारियों से बातचीत में नरमी रखें, पूज्य व्यक्ति के स्वास्थ्य की चिन्ता रह सकती है, धार्मिक कार्यो में रूझान बढ़ेगी, जीवनसाथी की आपसे अपेक्षा बढ़ सकती है.

तुला

आपको अपने सुझावों के आधार पर कार्य करना चाहिये, अपनी बात को स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे, तो लाभ होगा, व्यापार व्यवसाय से प्रतिस्पर्धा का लाभ मिलेगा, मानसिक उत्साह एवं आत्म विश्वास रहेगा, पारिवारिक मामलों में स्थिति सुधरेगी, नौकरी एवं राज्यपक्ष में वातावरण पक्षधर रहेगा, धार्मिक कार्यो में खर्च होगा, कामकाजी महिलाओं को लाभ प्राप्त होगा.

वृश्चिक

ड्डइस सप्ताह सावधानी पूर्वक कार्य करना लाभकारी रहेगा, अपनी बात को स्पष्ट रूप से पेश करें, आपसी व्यक्ति के कारण परेशानी हो सकती है, व्यापार व्यवसाय में अत्याधिक विश्वास न करें, आर्थिक लेनदेन की चिन्ता रह सकती है, पारिवारिक मतभेद में कमी का अनुभव होगा, परिश्रम उतना ही करें, जितना आपका शरीर साथ दे, धर्म कर्म में खर्च होगा.

धनु

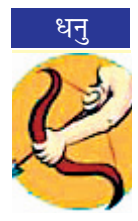

सप्ताह के पूर्वार्ध में आप अपने जिद्दी एवं क्रोधी स्वाभाव के कारण अपने आपको अकेला महसूस करेंगे, प्रभावशाली लोगों से संपर्क बढ़ेगा, कारोबार में विस्तार का योग है, साहसिक प्रयत्नों से शत्रुबाधा दूर होगी, सप्ताह के उत्तरार्ध में आर्थिक उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे, नौकरी एवं राजनैतिक क्षेत्र में व्यस्तता रहेगी, धन संपत्ति के कार्यो में सफलता के योग हैं.

मकर

अधिकारियों एवं विशिष्टजनों के सहयोग से कामकाज में सफलता मिलेगी, परिश्रम अधिक होगा, आजीविका संबंधी कार्यो में प्रगति होगी, राजकीय क्षेत्र में सफलता मिलेगी, धन, संपत्ति के मामलों में भागदौड़ करना पडेगी, सप्ताह के उत्तरार्ध में कारोबार में मंदी होने से आर्थिक परेशानियों का सामना हो सकता है, प्रियजनों एवं मित्रों से बहुत ज्यादा उम्मीद न रखें.

कुम्भ

क्रोध की अधिकता से बचें, प्रियजनों से व्यर्थ का विवाद हो सकता है, दैनिक कामकाज में व्यस्तता रहेगी, दूसरों की सलाह से किये गये कार्य परेशानी दायक हो सकते हैं, स्वविवेक से कार्य करना हितकर रहेगा, मान प्रतिष्ठा धूमिल हो सकती है, पारिवारिक जीवन में गंभीरता से कार्य करें, नौकरी एवं अन्य राजनैतिक क्षेत्रों में स्थिति अनुकूल रहेगी.

मीन

सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन में नयी जिम्मेदारी बढ़ेगी, आपसी लोग आपकी बातों और कार्यप्रणाली से प्रभावित होंगे, प्रियजनों का सहयोग मिलेगा, दाम्पत्य संबंधों में निकटता आयेगी, चल-अचल संपत्ति से लाभ के योग हैं, बंधुजनों का सहयोग मिलेगा, किसी धार्मिक कार्य की रूपरेखा पर विचार हो सकता है, अपूर्ण समाचारों पर निर्णय लेने से बचें.